रविवार 5 अप्रैल, 2026

विषय — कल्पना

स्वर्ण पाठ: यूहन्ना 3 : 16

"क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।"

उत्तरदायी अध्ययन: भजन संहिता 16 : 5-11

5 यहोवा मेरा भाग और मेरे कटोरे का हिस्सा है; मेरे बाट को तू स्थिर रखता है।
6 मेरे लिये माप की डोरी मनभावने स्थान में पड़ी, और मेरा भाग मनभावना है॥
7 मैं यहोवा को धन्य कहता हूं, क्योंकि उसने मुझे सम्मत्ति दी है; वरन मेरा मन भी रात में मुझे शिक्षा देता है।
8 मैं ने यहोवा को निरन्तर अपने सम्मुख रखा है: इसलिये कि वह मेरे दाहिने हाथ रहता है मैं कभी न डगमगाऊंगा॥
9 इस कारण मेरा हृदय आनन्दित और मेरी आत्मा मगन हुई; मेरा शरीर भी चैन से रहेगा।
10 क्योंकि तू मेरे प्राण को अधोलोक में न छोड़ेगा, न अपने पवित्र भक्त को सड़ने देगा॥
11 तू मुझे जीवन का रास्ता दिखाएगा; तेरे निकट आनन्द की भरपूरी है, तेरे दाहिने हाथ में सुख सर्वदा बना रहता है॥

पाठ उपदेश

बाइबल

1. मत्ती 26 : 1, 2

1 जब यीशु ये सब बातें कह चुका, तो अपने चेलों से कहने लगा।
2 तुम जानते हो, कि दो दिन के बाद फसह का पर्व्व होगा; और मनुष्य का पुत्र क्रूस पर चढ़ाए जाने के लिये पकड़वाया जाएगा।

2. यूहन्ना 2 : 13-19, 21, 22

13 यहूदियों का फसह का पर्व निकट था और यीशु यरूशलेम को गया।
14 और उस ने मन्दिर में बैल और भेड़ और कबूतर के बेचने वालों ओर सर्राफों को बैठे हुए पाया।
15 और रस्सियों का को ड़ा बनाकर, सब भेड़ों और बैलों को मन्दिर से निकाल दिया, और सर्राफों के पैसे बिथरा दिए, और पीढ़ों को उलट दिया।
16 और कबूतर बेचने वालों से कहा; इन्हें यहां से ले जाओ: मेरे पिता के भवन को व्यापार का घर मत बनाओ।
17 तब उसके चेलों को स्मरण आया कि लिखा है, तेरे घर की धुन मुझे खा जाएगी।

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

18 इस पर यहूदियों ने उस से कहा, तू जो यह करता है तो हमें कौन सा चिन्ह दिखाता है?
19 यीशु ने उन को उत्तर दिया; कि इस मन्दिर को ढा दो, और मैं उसे तीन दिन में खड़ा कर दूंगा।
21 परन्तु उस ने अपनी देह के मन्दिर के विषय में कहा था।
22 सो जब वह मुर्दों में से जी उठा तो उसके चेलों को स्मरण आया, कि उस ने यह कहा था; और उन्होंने पवित्र शास्त्र और उस वचन की जो यीशु ने कहा था, प्रतीति की॥

3. मरकुस 15 : 1

1 और भोर होते ही तुरन्त महायाजकों, पुरनियों, और शास्त्रियों ने वरन सारी महासभा ने सलाह करके यीशु को बन्धवाया, और उसे ले जाकर पीलातुस के हाथ सौंप दिया।

4. यूहन्ना 19 : 16-18 (से *1st* ,)

16 तब उस ने उसे उन के हाथ सौंप दिया ताकि वह क्रूस पर चढ़ाया जाए॥
17 तब वे यीशु को ले गए। और वह अपना क्रूस उठाए हुए उस स्थान तक बाहर गया, जो खोपड़ी का स्थान कहलाता है और इब्रानी में गुलगुता।
18 वहां उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाया।

5. यूहन्ना 20 : 1-3, 5 (से ;), 8, 9, 11-14, 16, 19, 21, 22

1 सप्ताह के पहिले दिन मरियम मगदलीनी भोर को अंधेरा रहते ही कब्र पर आई, और पत्थर को कब्र से हटा हुआ देखा।
2 तब वह दौड़ी और शमौन पतरस और उस दूसरे चेले के पास जिस से यीशु प्रेम रखता था आकर कहा, वे प्रभु को कब्र में से निकाल ले गए हैं; और हम नहीं जानतीं, कि उसे कहां रख दिया है।
3 तब पतरस और वह दूसरा चेला निकलकर कब्र की ओर चले।
5 और झुककर कपड़े पड़े देखे: तौभी वह भीतर न गया।
8 तब दूसरा चेला भी जो कब्र पर पहिले पहुंचा था, भीतर गया और देखकर विश्वास किया।
9 वे तो अब तक पवित्र शास्त्र की वह बात न समझते थे, कि उसे मरे हुओं में से जी उठना होगा।
11 परन्तु मरियम रोती हुई कब्र के पास ही बाहर खड़ी रही और रोते रोते कब्र की ओर झुककर,
12 दो स्वर्गदूतों को उज्ज़वल कपड़े पहिने हुए एक को सिरहाने और दूसरे को पैताने बैठे देखा, जहां यीशु की लोथ पड़ी थी।
13 उन्होंने उस से कहा, हे नारी, तू क्यों रोती है? उस ने उन से कहा, वे मेरे प्रभु को उठा ले गए और मैं नहीं जानती कि उसे कहां रखा है।
14 यह कहकर वह पीछे फिरी और यीशु को खड़े देखा और न पहचाना कि यह यीशु है।
16 यीशु ने उस से कहा, मरियम! उस ने पीछे फिरकर उस से इब्रानी में कहा, रब्बूनी अर्थात हे गुरू।
19 उसी दिन जो सप्ताह का पहिला दिन था, सन्ध्या के समय जब वहां के द्वार जहां चेले थे, यहूदियों के डर के मारे बन्द थे, तब यीशु आया और बीच में खड़ा होकर उन से कहा, तुम्हें शान्ति मिले।
21 यीशु ने फिर उन से कहा, तुम्हें शान्ति मिले; जैसे पिता ने मुझे भेजा है, वैसे ही मैं भी तुम्हें भेजता हूं।
22 यह कहकर उस ने उन पर फूंका और उन से कहा, पवित्र आत्मा लो।

6. प्रेरितों के काम 1 : 6-9

6 सो उन्हों ने इकट्ठे होकर उस से पूछा, कि हे प्रभु, क्या तू इसी समय इस्त्राएल को राज्य फेर देगा?
7 उस ने उन से कहा; उन समयों या कालों को जानना, जिन को पिता ने अपने ही अधिकार में रखा है, तुम्हारा काम नहीं।
8 परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे; और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे।
9 यह कहकर वह उन के देखते देखते ऊपर उठा लिया गया; और बादल ने उसे उन की आंखों से छिपा लिया।

7. 2 तीमुथियुस 1 : 1 (से *2nd* ,), 8-10

1 पौलुस की ओर से जो परमेश्वर की इच्छा से मसीह यीशु का प्रेरित है।
8 इसलिये हमारे प्रभु की गवाही से, और मुझ से जो उसका कैदी हूं, लज्ज़ित न हो, पर उस परमेश्वर की सामर्थ के अनुसार सुसमाचार के लिये मेरे साथ दुख उठा।
9 जिस ने हमारा उद्धार किया, और पवित्र बुलाहट से बुलाया, और यह हमारे कामों के अनुसार नहीं; पर अपनी मनसा और उस अनुग्रह के अनुसार है जो मसीह यीशु में सनातन से हम पर हुआ है।
10 पर अब हमारे उद्धारकर्ता मसीह यीशु के प्रगट होने के द्वारा प्रकाश हुआ, जिस ने मृत्यु का नाश किया, और जीवन और अमरता को उस सुसमाचार के द्वारा प्रकाशमान कर दिया।

8. प्रकाशित वाक्य 1 : 1, 18 (से *2nd* ;)

1 यीशु मसीह का प्रकाशितवाक्य जो उसे परमेश्वर ने इसलिये दिया, कि अपने दासों को वे बातें, जिन का शीघ्र होना अवश्य है, दिखाए: और उस ने अपने स्वर्गदूत को भेज कर उसके द्वारा अपने दास यूहन्ना को बताया।
18 मैं मर गया था, और अब देख; मैं युगानुयुग जीवता हूं।

9. यूहन्ना 14 : 19 (इसलिये)

19 ... मैं जीवित हूं, तुम भी जीवित रहोगे।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 410 : 4-13

"यह जीवन अनन्त है," यीशु कहते हैं, - है, नहीं होगा; और फिर वह अपने पिता और स्वयं के वर्तमान ज्ञान के रूप में अनन्त जीवन को परिभाषित करता है, - जिसका अर्थ है प्रेम, सत्य और जीवन का ज्ञान। और अनन्त जीवन यह है, कि वे तुझ अद्वैत सच्चे परमेश्वर को और यीशु मसीह को, जिसे तू ने भेजा है, जाने। धर्मग्रंथ कहते

हैं, "इंसान सिर्फ़ रोटी से नहीं, बल्कि परमेश्वर के मुँह से निकलने वाले हर वचन से ज़िंदा रहेगा," यह दिखाता है कि सत्य ही इंसान की असली ज़िंदगी है; लेकिन इंसान इस शिक्षा को प्रैक्टिकल बनाने पर एतराज़ करते हैं।

2. 468 : 25-29

सवाल*:* — जिंदगी क्या है?

उत्तर*:* — जीवन ईश्वरीय सिद्धांत है, मन, आत्मा, रूह। जीवन की कोई शुरुआत नहीं है और कोई अंत नहीं है। समय नहीं, बल्कि अनंत काल, जीवन के विचार को व्यक्त करता है, और समय अनंत काल का हिस्सा नहीं है।

3. 469 : 4 (जीवन दिव्य है)-5 (से *2nd* .)

जीवन दिव्य मन है। जीवन सीमित नहीं है। जीवन के लिए मौत और सीमितता अज्ञात हैं।

4. 497 : 20 (हम)-23

हम मानते हैं कि यीशु को सूली पर चढ़ाया जाना और उनका फिर से ज़िंदा होना, हमेशा रहने वाले जीवन को समझने के लिए विश्वास को बढ़ाने में मदद करता है, यहाँ तक कि आत्मा, स्पिरिट और चीज़ों की कमी को भी।

5. 426 : 23-28

मृत्यु में सभी विश्वासों का त्याग और इसके डंक के डर से स्वास्थ्य और नैतिकता के स्तर को अपने वर्तमान उत्थान से बहुत ऊपर उठाया जा सकता है, और हमें ईश्वर में जीवन के प्रति असीम विश्वास के साथ ईसाई धर्म के बैनर को धारण करने में सक्षम करेगा।

6. 509 : 4-8

हमारे गुरु अपने शिष्यों के सामने फिर से प्रकट हुए, — उनकी आशंका के अनुसार वे कब्र से उठे, — अपने ऊपर उठते विचार के तीसरे दिन, और इस तरह उन्हें हमेशा रहने वाले जीवन का पक्का एहसास कराया।

7. 314 : 10-2

यहूदियों ने, जो परमेश्वर के इस जन को मारना चाहते थे, यह स्पष्ट रूप से दिखा दिया कि उनके भौतिक दृष्टिकोण ही उनके दुष्ट कार्यों के जनक थे। जब यीशु ने अपने शरीर को दोबारा बनाने की बात की, — यह जानते हुए कि मन ही इसे बनाता है, — और कहा, "कि इस मन्दिर को ढा दो, और मैं उसे तीन दिन में खड़ा कर दूंगा," तो उन्होंने सोचा कि उनका मतलब उनके शरीर के बजाय उनके भौतिक मंदिर से था। ऐसे पूंजीवादी लोगों को असली इंसान एक भूत जैसा लगता था, अनदेखा और अनजान, और शरीर, जिसे वे कब्र में रखते थे, पदार्थ जैसा लगता था। इस भौतिकवाद ने सच्चे यीशु को नज़रअंदाज़ कर दिया; लेकिन वफ़ादार मरियम ने उसे देखा, और उसने पहले से कहीं ज़्यादा उसके सामने जीवन और तत्व का सच्चा विचार प्रस्तुत किया।

इंसानों के भौतिक और पापी विश्वास के कारण, आध्यात्मिक यीशु उनके लिए अदृश्य थे। दिव्य विज्ञान का उनका प्रदर्शन, जीवन की समस्या को जितना ऊँचा उठाता था, और वे इसके दिव्य सिद्धांत, सत्य और प्रेम की माँगों को

जितना साफ़ तौर पर बताते थे, वे पापियों और उन लोगों के लिए उतने ही ज़्यादा नफ़रत भरे होते गए, जो पाप और बीमारी से बचने के लिए सिद्धांतों और भौतिक नियमों पर निर्भर थे, और जीवन के ज़रूरी नियम के अनुसार मौत को भी मान लेते थे। यीशु ने अपने फिर से जी उठने से उन्हें गलत साबित कर दिया, और कहा: "जो कोई जीवता है, और मुझ पर विश्वास करता है, वह अनन्तकाल तक न मरेगा।"

8. 315 : 21-24

यीशु की आध्यात्मिक उत्पत्ति और समझ ने उसे होने के तथ्यों को प्रदर्शित करने में सक्षम किया, - यह साबित करने के लिए कि आध्यात्मिक सत्य भौतिक त्रुटि को कैसे नष्ट करता है, बीमारी को ठीक करता है, और मृत्यु को मात देता है।

9. 46 : 13-17, 20-3

गुरु ने स्पष्ट रूप से कहा कि शरीर आत्मा नहीं है, और अपने पुनरुत्थान के बाद उन्होंने भौतिक इंद्रियों से यह सिद्ध कर दिया कि उनका शरीर तब तक नहीं बदला जब तक कि वे स्वयं स्वर्गारोहण नहीं कर लेते - या, दूसरे शब्दों में, आत्मा, ईश्वर की समझ में और भी ऊंचे नहीं उठ जाते।

यीशु की मृत्यु के बाद लगने वाली शारीरिक स्थिति सभी भौतिक स्थितियों से ऊपर होने के कारण उसकी मृत्यु हो गई, और इस अतिशयोक्ति ने उसके उदगम की व्याख्या की, और कब्र से परे एक परिवीक्षाधीन और प्रगतिशील राज्य का खुलासा किया। यीशु "रास्ता" था इसका मतलब है, उसने सभी पुरुषों के लिए रास्ता चिह्नित किया। अपने अंतिम प्रदर्शन में, स्वर्गारोहण कहा जाता है, जिसने यीशु के सांसारिक रिकॉर्ड को बंद कर दिया, वह अपने शिष्यों के भौतिक ज्ञान से ऊपर उठ गया, और भौतिक इंद्रियों ने उसे नहीं देखा।

उसके बाद उनके छात्रों को पवित्र आत्मा प्राप्त हुई। इसका मतलब है कि उन्होंने जो कुछ भी देखा और सहा, उससे वे ईश्वरीय विज्ञान की बेहतर समझ के लिए जागे, यहाँ तक कि यीशु की शिक्षाओं और प्रदर्शनों की आध्यात्मिक व्याख्या और समझ के लिए भी, जिससे उन्हें ईश्वर के जीवन का एक हल्का सा अंदाज़ा हुआ।

10. 34 : 18-28

अनुभवी सभी शिष्यों के माध्यम से, वे अधिक आध्यात्मिक हो गए और बेहतर समझा कि मास्टर ने क्या सिखाया था। उनका पुनरुत्थान भी उनका पुनरुत्थान था। इससे उन्हें खुद को और दूसरों को आध्यात्मिक नीरसता से दूर रखने और ईश्वर में असीम संभावनाओं की धारणा में अंधे होने में मदद मिली। उन्हें इस जल्दी की आवश्यकता थी, जल्द ही उनके प्रिय मास्टर वास्तविकता के आध्यात्मिक क्षेत्र में फिर से उठेंगे, और उनकी आशंका से बहुत ऊपर उठेंगे। अपने विश्वासयोग्य के लिए पुरस्कार के रूप में, वह उस परिवर्तन में भौतिक अर्थों के लिए गायब हो जाएगा जिसे तब से उदगम कहा जाता है।

11. 232 : 16-19, 26-31

हमारे काल में ईसाइयत फिर से ईश्वरीय सिद्धांत की शक्ति का प्रदर्शन कर रही है, जैसा कि उन्नीस सौ साल पहले हुआ था, बीमारों के इलाज और मृत्यु पर विजय पाने से।

सत्य के पवित्र अभयारण्य में गंभीर महत्व की आवाजें हैं, लेकिन हम उन पर ध्यान नहीं देते हैं। जब हमारे जीवन में तथाकथित सुख और दुख दूर हो जाते हैं, तभी हम त्रुटि के दफनाने और आध्यात्मिक जीवन के पुनरुत्थान के निर्विवाद संकेत पाते हैं।

12. 292 : 7-10, 14-16 (से *1st* .), 27-2

सत्य हमारे लिए "पुनरुत्थान और जीवन" तभी होगा जब यह सभी गलतियों और इस विश्वास को खत्म कर देगा कि मन, जो इंसान की एकमात्र अमरता है, शरीर से बंधा हो सकता है, और जीवन मौत से कंट्रोल हो सकता है।

नश्वर मन के लिए, सामग्री पर्याप्त है, और बुराई वास्तविक है।

यह भौतिक मानसिकता, गलत दिमाग, नश्वर है। इसलिए मनुष्य का सर्वनाश होगा, क्या यह आध्यात्मिक वास्तविक मनुष्य के अपने ईश्वर के साथ अविवेकी संबंध के लिए नहीं था, जिसे यीशु ने प्रकाश में लाया था। अपने पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण में, यीशु ने दिखाया कि नश्वर मनुष्य, मनुष्यत्व का वास्तविक सार नहीं है, और यह अवास्तविक भौतिक नश्वरता वास्तविकता की उपस्थिति में लुप्त हो जाती है।

13. 289 : 1-2

सत्य का प्रदर्शन शाश्वत जीवन है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी

सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6